# अचानकमार-अमरकंटक बायोस्फियर रिजर्व में पाये जाने वाले औषधीय पौधे, उनकी उपयोगिता एवं संरक्षण: भाग दो

**डॉ. रूबी शर्मा*, डॉ. राजेश कुमार मिश्रा एवं डॉ. एन. रॉयचौधुरी**

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

*पूर्व महिला वैज्ञानिक 'बी', अचानकमार-अमरकंटक बायोस्फियर रिजर्व के अन्तर्गत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की परियोजना, उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

विश्व में औषधीय पौधों की लगभग 2500 प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें 1158 प्रजातियां भारत में हैं। इन औषधीय पौधों की उपयोगिता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि इनका उल्लेख वेदों में भी किया गया है। इनमें से 81 औषधीय पौधों का वर्णन यजुर्वेद, 341 वनस्पतियों का उल्लेख अथर्ववेद, 341 का उल्लेख चरक संहिता और 395 औषधीय पादपों और प्रयोग का वर्णन सुश्रुत में है।

भारत के उच्च हिमालयी और मध्य हिमालयी रेंज में पाई जाने वाले गन्द्रायण, कालाजीरा, जम्बू, ब्राह्मी, थुनेर, घृतकुमारी, गिलोय, निर्गुडी, इसवगोल, दुधी, चित्रक, बहेड़ा, भारंगी, कुटज, इन्द्रायण, पिपली, सत्यानाशी, पलास, कृष्णपर्णी, सालपर्णी, दशमूल, श्योनांक, अश्वगंधा, पुनर्नवा, अरण आदि जड़ी बूटियां अब दुर्लभ होती जा रही हैं। इसका कारण जलवायु परिवर्तन और वनों से जड़ी-बूटियों का अवैानिक तरीके से किया जा रहा दोहन को माना जा रहा है।

पिछले कुछ दशकों के भीतर बढ़ती आयुर्वेदिक दवाओं की मांग को पूरा करने के लिए औषधीय पौधों का अत्यधिक दोहन हो रहा है। भारत के हिमालयी रेंज में पाई जाने वाले औषधीय पादपों पर संकट छाया हुआ है। तापमान में बढ़ोतरी से भी जड़ी बूटियां विलुप्त हो रही हैं। मौजूदा समय में 800 प्रजातियां संकटग्रस्त श्रेणी में शामिल हो चुकी हैं। जिस हिमालयी रेंज में यह औषधीय वनस्पतियां बहुतायत में पाई जाती थी वहां पर अब यह दुर्लभ हो चुकी हैं। यहां तक कि विभिन्न बीमारियों में बनने वाली दवाओं में अब इन औषधियों के स्थान पर इनके प्रतिस्थानी (सब्सीट्यूट) का उपयोग किया जा रहा है।

पेड़-पौधे हमारे शरीर में होने वाली बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए हमें बहुत कुछ दे सकते हैं। यही कारण है कि प्राचीन काल से ही मनुष्य ने तरह-तरह के पेड़-पौधों का उपयोग किया है अपने-आप को बीमारियों से सुरक्षित रखने के लिए। मानव सभ्यता के विकास के साथ ही इस विज्ञान ने भी तरक्की की है। यही कारण है कि प्राचीन जितनी

भी विकसित सभ्यताएँ थी उन सभी में औषधीय पौधों के उपयोग की सबल परम्परा थी, चाहे मिस्र हो, यूनान हो, बेबीलोन की सभ्यता हो, चीन हो या सिन्धु घाटी की सभ्यता हो। सभी के साथ कुछ ऐसा अवश्य था कि उन्होंने अपनी अलग परम्परा विकसित कर ली थी। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं से निपटने के लिए उन परम्पराओं में औषधीय पौधों का महत्त्वपूर्ण स्थान था।

भारत विश्व के गिने चुने देश में से है जिन्हें उच्च जैव विविधता वाले देश का दर्जा दिया जाता है। इसका कारण है कि भारत में अनेक प्रकार के जीव पाये जाते हैं जिनमें वनस्पति तथा पशु दोनों ही हैं। इन दोनों में भारत अत्यधिक सम्पन्न है और बहुत सारे पेड़-पौधे तथा पशु-पक्षी ऐसे हैं जो केवल भारत में ही होते हैं। तरह-तरह के पेड़-पौधों में ऐसे पेड़-पौधे भी हैं जिनमें औषधीय गुण होते हैं। इनका उपयोग भारत में सदियों से होता रहा है। भारत को इस सम्बन्ध में एक खास स्थान प्राप्त है। आज भी भारत में करोड़ों लोग ऐसे हैं जो सीधे जड़ी-बूटियों से अपनी बीमारियों का इलाज करते हैं या ऐसी दवाओं का उपयोग करते हैं जिनका आधार जड़ी-बूटियाँ हैं।

अचानकमार -अमरकंटक बायास्फियर रिजर्व में अभी तक कुल 1527 पादप प्रजातियों की पहचान की जा चुकी है जिनमें लगभग पेड़ पौधों का औषधीय प्रयाग भी रिकार्ड किया गया है। चूँकि यह जीवमंडल कई तरह के जंगल तथा प्राकृतिक आवासों जैसे साल वन, मिश्रित वन, बाँस वन, पहाड़ी क्षेत्र, घाटी क्षेत्र नदी नालों के किनारे, वृक्षारोपण क्षेत्र, चारागाह, आदि पाये जाते है, इसलिए यहाँ पादपों में बहुत विविधता देखी गयी है। इस जैव विविधता का संरक्षण तभी किया जा सकेगा, जब हम इनकी पहचान कर सकेंगे। इसके अलावा यहाँ निवास करने वाले स्थानीय आदिवासी समुदायों में प्राथमिक प्राकृतिक चिकित्सा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से द्वितीय भाग में यहाँ 29 पौधो का प्रचलित नाम , कुल, वैज्ञानिक नाम, उपयोगी भाग व उपयोग दर्शाया गया है।

**प्रचलित नाम - शंखपुष्पी**

**कुल** - कान्वॉल्वुलेसी

**वैज्ञानिक नाम** - ईवाल्व्यूलस अल्सीनॉईडिस

**उपयोग भाग** - पंचांग व जड़

**उपयोग** - मानसिक रोग, उन्माद, अपस्मार, अनिद्रा, भम्र व विष में लाभकारी है। श्वास रोग, रक्तस्त्राव व रक्त वमन में लाभदायक जड़ केन्द्र प्रयोग से दस्त द्वारा शारीरिक

विष निकल जाता है। पंचांग का स्वरस उन्माद व अनिद्रा में अतिलाभकारी है । इसका प्रयोग, मलेरिया, ज्वर, कण्डमाल में किया जाता है।

**प्रचलित नाम - हुरहुर**

**कुल** - कप्पारिडेसी

**वैज्ञानिक नाम** - कलिओम विस्कोसा

**उपयोग भाग** - पत्ती व बीज

**उपयोग** - रक्तपित्त, श्वासरोग, ज्वर, कुष्टरोग, प्रमेह, कृमिनाशक के रूप में इसका प्रयोग किया जाता है। आन्तरिक शोथ में पत्रों का लेप लाभकारी होता है । जोड़ो के दर्द, पाचन के लिए भी बीज उपयोग किये जाते है।

**प्रचलित नाम - काली मूसली**

**कुल** - अमैरिलीडेसी

**वैज्ञानिक नाम** - कुरकुलिगो आरकियाईडिस

**उपयोग भाग** - कंदिल जड़

**उपयोग** - इसकी जड़ अतिसार, बल, लिंग दौर्बल्य, शूल, मूत्रकच्छ में

लाभकारी होती है। इसके मूल का लेप अस्थिभंग व चोट के लिए किया जाता है।

**प्रचलित नाम - भृंग राज**

**कुल** - एस्टरेसी

**वैज्ञानिक नाम** - ईकलिप्टा अल्बा

**उपयोग भाग** - पंचांग, पत्ती, बीज व जड़

**उपयोग** - यह घाव, अस्थिरोपण, कैंसर, जीर्णज्वर, केश, कुपचन, यकृत रोग, श्वासरोग, चर्मरोग, स्वरभेद, अग्निदग्ध, सफेद दाग आदि में प्रयोग किया जाता है । इसके पंचांग स्वरस से यकृतवृद्धि, प्लीहावृद्धि, उदररोग आदि विकार नष्ट होते हैं।

**प्रचलित नाम - भुई आंवला**

**कुल** - यूर्फोबियेसी

**वैज्ञानिक नाम** - फाईलेंथस स्पी

**उपयोग भाग** - जड़, पत्ती व पंचांग

**उपयोग** - जलोदर, मूत्र रोग, दाह, प्रमेह, अतिसार, शूल प्रवाहिका अग्निमंधता, चर्मरोग आदि में इसका प्रयोग किया जाता है । मलेरिया व पीलिया में इसका क्वाथ, रक्तप्रदर में बीजें का चूर्ण, मधुमेह में पंचांग, खाज खुजली में पत्रों का पुल्टिस व अतिसार में पंचांग का क्वाथ हितकारी है।

**प्रचलित नाम - विदारीकंद**

**कुल** - लेग्यूमिनोसी

**वैज्ञानिक नाम** - प्यूरेरिया टयूबरोसा

**उपयोग भाग** - कंदिल जड़

**उपयोग** - इसका कंद दुग्ध वर्धक, शुक्रवर्धक बल, कांति, बढ़ाने व वायु व दाह नाशक है । विषम ज्वर व पित्तशूल में विदारीकंद का स्वरस लाभकारी होता है। अशक्ति व पोषण के अभाव वाले बच्चों को इसका पाक लाभ देता है।

**प्रचलित नाम - सहदेवी**

**कुल** - एस्टरेसी

**वैज्ञानिक नाम** - वरनोनिया साईनेरिया

**उपयोग भाग** - जड़, फूल, बीज, पंचांग

**उपयोग** - इसकी जड़ जलोदर व विषम ज्वर में लाभकारी है। ज्वर, में पंचाग स्वरस से लाभ होता है। इसके बीज कृमिनाशक है, इसकी मूल सिरहाने रखने से अनिद्रा में लाभ मिलता है। मुखरोगों में ज्वर का स्वरस पिलाने से ज्वर उतर जाता है।

**प्रचलित नाम - कंटकरीका**

**कुल** - सोलेनेसी

**वैज्ञानिक नाम** - सोलेनम सुरेटेन्स

**उपयोग भाग** - पंचांग, फल, बीज

**उपयोग** - इसके पंचांग का प्रयोग जीर्णश्वसनी शोथ, श्वासरोग, स्वरयंत्र शोध, हृदयघात, रक्तदाव नियंत्रण में लाभकारी होता है। इसके मूल का क्काथ मूत्रकच्छ ज्वर में इसकी मूल आमवात में पत्तों के स्वरस व गले की सूजन में फल का स्वरस लाभकारी होता है।

**प्रचलित नाम - महाबला**

**कुल** - फेबेसी

**वैज्ञानिक नाम** - साईडा रोम्बीफोलिया

**उपयोग भाग** - पंचांग, जड़, पत्ती

**उपयोग** - हृदय रोग, शोथ, शुक्रवर्धक, विषम ज्वर, आमवात, श्वेत प्रदर की यह लाभकारी औषधि है। सूजन में पत्तियों का लेप शीतज्वर व आमवात में मूल का क्काथ व श्वेतप्रदर में पत्तियों को पीसकर मधु के साथ सेवन से लाभ मिलता है।

**प्रचलित नाम - मन्जीष्ठा**

**कुल** - रूबीयेसी

**वैज्ञानिक नाम** - रूबीया कार्डीफोलिया

**उपयोग भाग** - जड़ व तना

**उपयोग** - इसके तने का प्रयोग कोबरा, नागदंश, बिच्छूदंश में लाभकारी होता है। इसके मूल का प्रयोग अंगघात, मूत्रघात, प्रमेह, चर्मरोग, अतिसार, नेत्ररोग आदि में लाभकारी होता है। अस्थिरोग में इसके मूल को अर्जुन व मुलैठी को क्काथ के साथ लेने से लाभ होता है। यकृत रोग में इसके फल का प्रयोग लाभकारी होता है।

**प्रचलित नाम - झुलीफूल**

**कुल** - जिरेनियेसी

**वैज्ञानिक नाम** - बायोफाइटम सेंसीटिवम

**उपयोग भाग** - पंचांग, पत्ती, बीज

**उपयोग** - बीज का चूर्ण जख्मी भाग व त्वचा के रोगों में प्रयोग किया जाता है। पत्ती, रक्तरोधी, स्वरस चोट आदि पर बाहरी

प्रयोग व क्वाथ श्वास रोग, मूल का क्वाथ ज्वर में लाभकारी होता है।

**प्रचलित नाम - तेजराज**

**कुल** - एपियेसी

**वैज्ञानिक नाम** - प्यूसिडेनम नागपुरेंस

**उपयोग भाग** - बीज, जड़, फल

**उपयोग** - इसकी जड़ बलवर्धक मानी जाती है। इसके फल व बीज आमाषय के रोग, अग्निमंद्यता, दौर्बल्य, पाचन तंत्र, बच्चों के अनेक रोग, आध्मान, पाचन विकार, उदरमूल, वमन, अतिसार आदि के लिए किया जाता है।

**प्रचलित नाम - पाठर**

**कुल** - मेनिस्पर्मेसी

**वैज्ञानिक नाम** - सिसेम्पेलॉस पटेरा

**उपयोग भाग** - मूल व छाल

**उपयोग** - इसकी जड़ मूत्राशय शोथ, मूल का क्वाथ पलीहा वृद्धि, कुपाचन, सिर वेदना, अतिसार, पत्रों का रस, नेत्ररोगों में, चर्मरोगों एवं घाव, ज्वर, अपस्मार, श्वसनीशोथ, उदरशूल आदि में अत्यंत लाभकारी होता है।

**प्रचलित नाम - सतावर**

**कुल** - एस्पेरेगेसी

**वैज्ञानिक नाम** - एस्पैरेगस रेसिमोसस

**उपयोग भाग** - जड़

**उपयोग** - पत्ती का रस कैंसर प्रतिरोधक, व बलवृद्धि करने की क्षमता रखता है। रक्तातिसार में जड़ का चूर्ण, स्वरभेद, कफ, जुकाम, रात्री अंधता में लाभकारी होता है। उदर, आमाषय आंत के अल्सर, अम्लपित्त में मूल का चूर्ण। गर्भाशय की विकृति दुग्धवर्धक, शुक्रदोष, मधुमेह व सामान्य दौर्बल्य में यह अतिलाभकारी होती है।

**प्रचलित नाम - केवकंद**

**कुल** - कॉस्टेसी

**वैज्ञानिक नाम** - कॉस्टस स्पीसीयोसस

**उपयोग भाग** - प्रकंद

**उपयोग** - इसके प्रकंद से स्टेरॉयड का उत्पादन किया जाता है। इसे ज्वर, जलोदर, श्वास, सर्वांग शोथ, आमवातत्र, मूत्राशय के रोग आदि में प्रयोग किया जाता है। श्वास व हृदय रोग

में मूल के चूर्ण लाभकारी होता है । हड्डियों की पीड़ा वात रोग में अतिलाभकारी होता है ।

**प्रचलित नाम - तिखुर**

**कुल** - जिन्जीबरेसी

**वैज्ञानिक नाम** - कुरकुमा अंगस्टीफोलिया

**उपयोग भाग** - प्रकंद

**उपयोग** - इसके प्रकंद में पाया जाने वाले स्टार्च का सत (एक्स्ट्रेक्ट) कर आटे के रूप में प्रयोग में लाया जाता है । यह बुजुर्ग, बच्चे व लंबी बीमारी से (उबरे) व्यक्तियों के लिए अतिलाभकारी होता है । इसे पीलिया व मोतीझिरा के रोगियों के लिए लाभकारी है ।

**प्रचलित नाम - आमाहल्दी**

**कुल** - जिन्जीबरेसी

**वैज्ञानिक नाम** - कुरकुमा अमाडा

**उपयोग भाग** - प्रकंद

**उपयोग** - इसका प्रकंद, पाचक व उदर बल्य के लिए अच्छी औषधि है । इसे मोच व अंदरूनी चोटों की चिकित्सा में भी प्रयोग किया जाता है ।

**प्रचलित नाम - कालीहल्दी**

**कुल** - जिन्जीबरेसी

**वैज्ञानिक नाम** - कुरकुमा केसिया

**उपयोग भाग** - प्रकंद

**उपयोग** - इसका प्रकंद दमा रोग की लाभकारी औषधि है । इसे मूंद्रिचोट व मोच आदि में प्रयोग किया जाता है । इससे द्रव्य निकाला जाता है जो कपूर के उत्पादन में प्रयोग किया जाता है ।

**प्रचलित नाम - अकरकरा**

**कुल** - एस्टरेसी

**वैज्ञानिक नाम** - स्पाईलेन्थस एक्मेला

**उपयोग भाग** - फूल, पंचांग, जड़

**उपयोग** - इसके फूल का प्रयोग, गले के विकार, जीभ का लकवा व बच्चों में हकलाने की प्रवृत्ति लाभकारी होता है । इसके फूल

का अर्क दांत व जबड़ों के शूल में प्रभावी होता है।

इसकी जड़ पाचक होती है।

**घर की बाड़ी में लगाये जाने वाले औषधीय पौधे**

**प्रचलित नाम - अदरक सौंठ**

**कुल** - जिन्जीबरेसी

**वैज्ञानिक नाम** - जिन्जीबर ऑफिसिनेलिस

**उपयोग भाग** - प्रकंद

**उपयोग** - इसमें रक्तषोधन, बातहर, कफ, निःसारक, पाचन, उत्तेजक आदि गुण पाये जाते है। इसे आमवात, स्लीप-डिक्स, स्नायुविकार, श्वासरोग, खांसी, रोग प्रतिकारक शक्ति की वृद्धि आदि में प्रयोग किया जाता है।

ताजी प्रकंद व सूखी सौंठ दोनों ही रूप में यह प्रतिदिन भोजन में मसाले की तरह प्रयोग किया जाता है।

**प्रचलित नाम - लेमनग्रास**

**कुल** - पोएसी

**वैज्ञानिक नाम** - सिम्बोपोगॉन सिट्रेटस

**उपयोग भाग** - पत्तियाँ

**उपयोग** - यह बहुवार्षिक ऊँची घास की प्रजाति हैं जिसकी पत्तियाँ सुगंधित (नींबू सी महक) होती है। इसे ज्वर, वमन, अतिसार, जीर्ण मलेरिया, उदरषूल, आमवाल व खाज खुजली आदि में प्रयोग किया जाता है। नसला-जुकाम में इसके तेल की फोहे सूँघने से लाभ मिलता है।

**प्रचलित नाम - तुलसी**

**कुल** - लेमिएसी

**वैज्ञानिक नाम** - ऑसीमम बेसिलिकम

**उपयोग भाग** - पांचांग, पत्ती व बीज

**उपयोग** - तुलसी की लगभग चार-पांच प्रजातियाँ आमतौर पर औषधि के रूप में उपयोग किये जाते हैं। इसका पांचांग

जीर्ण, अतिसार, उदररोग, कृमिनाशक,

कीटाणुनाशक, फंफूदनाशक, कुपच, मूत्रकुच्छ में लाभकारी होता है । कर्णशूल व दंतशूल में इसका स्वरस लाभकारी होती है । बिच्छू के विष में इसका प्रयोग किया जाता है । पक्षाघात, सर्पविष, दाह में इसके बीजों का सेवन लाभकारी होता है ।

**प्रचलित नाम - पुदीना**

**कुल** - लेबिएटी

**वैज्ञानिक नाम** - मेन्था स्पाईकेटा

**उपयोग भाग** - पंचांग, पत्ती व तना

**उपयोग** - इसका उपयोग बंधत्व, रजोरोधि, कीटाणुनाशक व फफूँद नाशक की औषधियों में आमतौर से प्रयोग होता है । खांसी,

जुकाम, अतिसार, अग्निमांद्य, जीर्ण ज्वर, उदरमूल, वमन आदि में प्रयोग किया जाता है ।

**प्रचलित नाम - प्याज**

**कुल** - लिलिएसी

**वैज्ञानिक नाम** - ऐलियम सेपा

**उपयोग भाग** - पत्ती व बल्ब

**उपयोग** - यह हृदय रोग, श्वास रोग, रक्त में शक्कर आदि में लाभकारी औषधि का काम करती है । इसके बीज का रस सिरका में

पीस कर दाद में लगाने से लाभ देता है । कंद के रस सरसों के तेल के साथ आमवातादि, चर्मरोग, संधि विकार में लाभकारी है । मसूड़ों की सूजन, शूल में नमक के साथ पीने से लाभ मिलता है ।

**प्रचलित नाम - लहसुन**

**कुल** - लिलियेसी

**वैज्ञानिक नाम** - ऐलियम सटाईवम

**उपयोग भाग** - पूर्ण पौधा, पत्ती, कंद

**उपयोग** - यहां ज्वर, अपस्मार, चर्म रोगों में, बाहय रोग में, चर्म विकार, सर्दी जुकाम में कीटाणु नाशक, कफ निःसारक के रूप में कार्य करता है।

**प्रचलित नाम - गवारपाठा, घृतकुमारी**

**कुल** - लिलियेसी

**वैज्ञानिक नाम** - अलोय बारबाडेंसिस

**उपयोग भाग** - पत्ती, पत्ती का गूदा

**उपयोग** - पत्ती का गूदा, आमवात विकार, ज्वर, शूल, यकृत रोग, पाचन विकार, पलीहा के रोग, चर्म विकार आदि में अति लाभकारी है। यह त्वचा के जलने पर लेप करने से जल्दी लाभ देता है।

**प्रचलित नाम - अरंड**

**कुल** - यूर्फोबियेसी

**वैज्ञानिक नाम** - रिसीनस कम्यूनिस

**उपयोग भाग** - पंचांग, पत्ती, बीज, मूल, मूल छाल, पत्ती, पुष्प, फल, बीज का तेल।

**उपयोग** - पत्ती का प्रयोग मूलकृच्छ, कृमिरोग में लाभकारी है। इसका फल ज्वर, यकृत रोग, प्लीहावृद्धि शामक, श्वास रोग, चर्मरोग, नेत्र रोग, नाड़ी रोग, आमवात में लाभकारी है।

**प्रचलित नाम - हल्दी**

**कुल** - जिन्जीबरेसी

**वैज्ञानिक नाम** - कुरकुमा डोमेस्टिका

**उपयोग भाग** - प्रकंद

**उपयोग** - यह अतिविशिष्ट औषधि है व इसका प्रयोग देश के कोने-कोने में प्रतिदिन भोजन के माध्यम से किया जाता है। इसमें रक्तशोधन, शोथहर, कतहर, विषघ्न, उत्तेजक, यकृत

बल्य दायक, चर्मरोग शोधक जैसे गुण जाये पाते है । चोट, दाद, खुजली, त्वचा रोग, प्रमेह, खांसी-जुकाम, नेत्ररोग, बिच्छूविष, रक्ताविष, जीर्णज्वर आदि में इसे आमतौर पर प्रयोग किया जाता है ।

**प्रचलित नाम** - **मेंहदी**

**कुल** - लाईथरेसी

**वैज्ञानिक नाम** - लॉसोनिया इर्नमिस

**उपयोग भाग** - पत्ती, फूल, फल

**उपयोग** - यह शिरःशूल, श्वासनली शोथ, पलीहा रोग, केशवर्धक, प्रमेह आदि में प्रयोग किया जाता है । रक्तातिसार में बीज व षिरःषूल में इसके पत्रों को तेल व राल के साथ देने से लाभ मिलता है । इसकी छाल का क्वाथ जलने से होने वाले जख्मों में, पत्र व पुष्प का सत कुष्ठरोग में अत्यंत लाभकारी होता है ।

मानव शरीर की कोशिकाओं को नवीनता प्रदान करने वाली दवा में उपयोगी दुर्लभ वनस्पति कुनरनवा सहित 20 जड़ी-बूटियों का अमरकंटक में संरक्षण किया जा रहा है । इनमें डायबिटीज के दवा में उपयोगी वनस्पति गुड़मार व लीवर से जुड़ी बीमारियों का दवा बनाने में उपयोगी वनस्पति मजिस्ठा सहित अलग-अलग बीमारियों के इलाज में जरूरी औषधी बनाने में उपयोगी दुर्लभ वनस्पतियां शामिल हैं । जंगल से विलुप्त होती जा रही इन वनस्पतियों को संरक्षित करने के लिए अमरकंटक में संरक्षित वनक्षेत्र के जंगल क्षेत्र चिन्हित किया गया है । मजिस्ठा, ममीरा, कलिहारी, केवकंद, पताल कुम्हड़ा, वन अदरक, गुड़मार, देवसेमर, मालकामनी, गुरीच, चित्रक, कुनरनवा, वायविडंग, वनप्याज, कंधारी, लक्ष्मणकंद, मकोय, वनलहसुन, तीखुर व मुसली शामिल हैं । ये वनस्पतियां लीवर से जुड़े मर्ज, आंखों के सूरमा, कृमि नाशक, गैस से जुड़ी तकलीफ, हाइड्रोसिल, कफ व खांसी, ब्लड प्रेशर सहित अन्य बीमारी के इलाज में उपयोगी है । दवा बनाने वाली कई फर्म उत्पादन क्षमता की होड़ में जड़ी-बूटी व वनस्पति तैयार किए जाने के दौरान रासायनिक उर्वरकों का उपयोग करते हैं । इससे तैयार होने वाली वनस्पतियों की तुलना में अमरकंटक में प्राकृतिक रूप से उगने बढऩे वाली जड़ी-बूटियां ज्यादा प्रभावी होगी । यहां के जंगल में पाई जाने वाली जड़ी-बूटियां विशिष्ट गुणधर्म युक्त होती हैं । अमरकंटक की खास विशेषता यहां का वातावरण व जलवायु का माइक्रो क्लाइमेट होना है । मैकल पर्वत की अनेक छोटी पहाडिय़ां और पर्याप्त जलस्रोत यहां दुर्लभ जड़ी-बूटियों वनस्पतियों को विकसित होने के लिए अनुकूल है । अमरकंटक व छत्तीसगढ़ की सीमा के अचानकमार

में जैव विविधता की बाहुल्यता को युनेस्कों ने भी मान्यता दी है ।

औषधीय पेड़-पौधों का बढ़ता उपयोग तथा व्यापार देश की आर्थिक स्थिति के लिए लाभदायक है। परन्तु इस कारण एक समस्या उत्पन्न हुई है। समस्या है कि अनेक प्रकार के औषधीय पेड़-पौधे विलुप्तावस्था में पहुँच गए हैं। कारण है इनकी कटाई बिना इस तथ्य को ध्यान में रख कर हो रही है कि बढ़ते उपभोग का उनके बचे रहने पर क्या प्रभाव पड़ेगा। इस समय देश में जितने औषधीय पेड़-पौधों का उपयोग होता है उसमें से लगभग 90 से 95 प्रतिशत वनों से प्राप्त होता है। बहुत कम मात्रा है जो खेती से आती है। जहाँ तक वनों का सम्बन्ध है तो स्वयं वनों का क्षेत्रफल समय के साथ देश में कम हुआ है। इस समय देश में लगभग 19 प्रतिशत क्षेत्र में वन हैं और इसमें भी काफी बड़ा भाग है जो अच्छी हालत में नहीं है। ऐसी स्थिति में औषधीय पौधों का बढ़ता दोहन ऐसी स्थिति पैदा कर सकता है कि शीघ्र ही अनेक प्रकार के औषधीय पौधे पूरी तरह लुप्त हो जाएँ ।

ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि इस धरोहर को बचाने के लिए प्रयास किया जाए। इस क्षेत्र में काफी कुछ हो रहा है। उदाहरण के लिए देश में वनों के बड़े क्षेत्र को सुरक्षित कर दिया गया है ताकि वहाँ उपस्थित पेड़-पौधे तथ पशु-पक्षी को पूरी सुरक्षा मिले। उनत्तीस प्रकार के ऐसे पेड़-पौधे हैं जिनके निर्यात पर खास तरह से प्रतिबन्ध लगाया गया है। अधिक उपयोग में आने वाले औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। वनों के अन्दर ऐसे क्षेत्र जहाँ औषधीय पौधे अधिक हैं उन्हें एक खास दर्जा देकर सुरक्षित किया जा रहा है। इन्हें औषधीय पौधे सुरक्षित क्षेत्र का नाम दिया गया है। इन सबके अतिरिक्त एक अधिनियम भी भारत सरकार ने जारी किया है। इसे “जैवविधिता अधिनियम 2002” का नाम दिया गया है । परन्तु इस सबके बाद भी इस धरोहर को सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक है कि अधिक कारगर कदम उठाए जाएँ तथा आम लोगों को इस शुभ कार्य में शामिल किया जाए ।